आत्मा की अगुवाई में
मार्च 2019

INDIAN CHURCH OF CHRIST

“ ”

आत्मा तुम्हारे साथ रहता है दिन 1

यूहन्ना 14:16-17 मैं पिता से प्रार्थना करूंगा, और वह तुम्हें एक ङ्कसहायकङ्घ देगा, अर्थात् सत्य का आत्मा ताकि वो सदा तुम्हारे साथ रहे। संसार इस सहायक को ग्रहण नहीं कर सकता; क्योंकि वह न उसे देखता है और उसे जानता है। तुम उसे जानते हो; क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है।

लोग जब भावनात्मक कठिनाईयों से गुजरते हैं तब सल्लाहकार उन्हें मदद करते हैं कि वे उन बातों को पहचानें जिनके कारण वो इस समस्या में पड़े हैं और उसको सुलझाएं। लम्बे समय तक किसी एक विशेष समस्या पर काम करने के बजाए अधिकांश सल्लाहकार निरधारित समय तक ही किसी समस्या पर काम करते हैं, ताकि वे अपने ग्राहक के व्यक्तिगत समस्याओं को सुलझाने, जीवन परिवर्तन करने और खुशहाली के लिये उन्हें बढ़ावा दे सकें।

पवित्र आत्मा हमें सल्लाहकार के रूप में दिया गया है। किसी निर्धारित समय के लिये नहीं बल्कि हमेशा के लिये। वो हमारे साथ रहता है और हमारे भीतर भी रहेगा। संसार उसे अपना नहीं सकता क्योंकि न तो वह उसे देख पाता है और न ही उसे जानता है।

कल्पना करो कि हम जिसका सही में बहुत अधिक आदर करते हैं वह हमारे साथ हमारे घर में रहने आए, तो हम यह पूरा-पूरा ध्यान रखेंगे कि वह बहुत विशेष और अपने घर जैसा अपनापन महसूस करे। हम ध्यान रखेंगे कि उसे उसका भोजन समय पर मिले और वो भी सीधा-साधा भोजन नहीं पर खास-खास पकवान। हम हर बात में उस व्यक्ति को अपना सबसे उत्तम देना चाहते हैं।

क्या हम पवित्र आत्मा को हमारे अन्दर विशेष और अपनापन महसूस करा रहे हैं? सल्लाहकार होने के नाते उसे हमसे बात करना पसन्द है। उसकी सल्लाह को सुनने के लिये क्या हम समय निकालते हैं? आखिरी बार कब आपने पवित्र आत्मा का सल्लाह या मार्गदर्शन को सुना और उसके अनुसार किया? क्या हम पवित्र आत्मा के अनमोल सल्लाह को सुनने और उसके अनुसार करने को अपनी आदत बनाने का संकल्प ले सकते हैं, चाहे उसकी सल्लाह हमारी इच्छाओं के खिलाफ ही क्यों न हो? सिर्फ तब ही हम पूरे आत्मविश्वास के साथ यह कह सकते हैं कि हम पवित्र आत्मा हमारी अगुवाई करता है।

उपयोग:
पवित्र आत्मा के साथ एक यादगार समय बिताओ जहां आप उसे सल्लाह देने की बिनती करें और पूरे ध्यान से उसकी सल्लाह को सुनें और उसका अनुसरण करें।

पवित्र आत्मा तुम्हें सब बातें सिखाएगा

दिन 2

यूहन्ना 14:26-27 परन्तु ङसहायकङ्घ अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, वह सब तुम्हे स्मरण कराएगा। मैं तुम्हें शान्ति दिये जाता हूँ। मैं अपनी शान्ति तुम्हे देता हूँ। जैसे संसार देता है, वैसे मैं तुम्हें नहीं देता। तुम्हारा मन न गबराए और न तुम डरो।

स्कूल या कॉलेज में हमारे जीवन में ऐसे समय आए; जब किसी विशेष विषय की क्लास में बैठना हमें अच्छा नहीं लगता था। हो सकता है कि वो विषय हमें पसन्द नहीं था, या फिर वो शिक्षक हमें पसन्द नहीं था। या फिर उस क्लास में बैठने की बजाए बाहर कुछ और करना हमें अच्छा लगता था, जैसे फिल्म देखना या फिर कोई खेल।

पवित्र आत्मा एक उत्तम शिक्षक है। पवित्र आत्मा से बेहतर और कोई नहीं सिखा सकता है। जो विषय वो पढ़ाता है वो भी सबसे उत्तम विषय है। हो सकता है कि उस विषय के बारे में सीखने के लिये हमारे पास समय नही है। हो सकता है कि हमें वो विषय ही पसन्द नहीं है। पवित्र आत्मा जो दे सकता है उससे बढ़कर हमें कुछ और पसन्द है।

यह विषय शान्ति दे सकता है। यह हमें सब मुसिबतों और डर से छुटकारा देगा। एक न एक दिन हमें इसे विषय को पसन्द करना ही पड़ेगा, तो आज क्यों नहीं?

उपयोग:
पवित्र आत्मा के द्वारा वचनों को सुनने में एक यादगार समय बिताओ। उससे बिनती करो कि वह तुम्हे परमेश्वर की इच्छा को समझने और उसका अनुसरण करना सिखाए।

पवित्र आत्मा यीशु की गवाही देगा **दिन 3**

यूहन्ना 15:26-27 जब वह ड्डसहायकड्ड आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूंगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा। किन्तु तुम भी मेरे गवाह हो; क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ हो।

गवाही देने की परिभाषा यह है कि किसी बात के बारे में गम्भीरता से बोलना, खास तौर पर न्यायलय में, या किसी बात को साबित करना या उस बात का ठोस सबूत देना। यदि हम आत्मा की अगुवाई में चलते हैं तो, हम यीशु की गवाही देंगे।यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि उन्हें यीशु की गवाही देनी चाहिये क्योंकि वे आरम्भ से यीशु के साथ थे। तो, जितना ज्यादा समय पवित्र आत्मा हमारे साथ रहेगा, उतना ही ज्यादा हमें गम्भीर होना होगा यीशु की गवाही देने में।

हमारे आस-पास हम देखते हैं कि अधिकतर लोग ज्यादा से ज्यादा दूसरों के बारे में, प्रणाली के बारे में और प्रथाओं के बारे में गवाही देते हैं, और यीशु की गवाही देने में लोग कम होते जा रहे हैं।

चुनाव हमारा है, हमें किस बात के बारे में पूरी गम्भीरता के साथ बात करना है, यीशु के बारे में या दूसरी चीज़ों के बारे में।

उपयोग:
समय निकालकर आज किसी को यीशु की गवाही दो। हर दिन कम से कम एक व्यक्ति को यीशु की गवाही देने की आदत डालो और फिर धिरे-धिरे इसे बढ़ाते जाओ।

यूहन्ना 16:13-14 परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तब तुम्हे सम्पूर्णसत्य का मार्ग बताएगा। वह अपनी ओर से नहीं कहेगा, परन्तु जो कुछ वह सुनेगा, वही कहेगा और आनेवाली बातें तुम्हे बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा; क्योकि जो मेरी बातें हैं, वह उन्हें तुम्हे बताएगा।

इस संसार में हम देखते हैं कि लोग बार-बार अपनी ही महिमा करने में लगे रहते हैं। अपने बारे में वो ऊंची-ऊंची बातें करते हैं। और हम यह भी देखते हैं कि ऊंचे ओहदेवाले लोगों को ज्यादा महिमा मिलती है।

यदि हम आत्मा की अगुवाई में चल रहे हैं तो, आत्मा हमें हरएक सच्चाई दिखाएगा। उद्धार प्रभु से आता है। स्वर्ग में हम यह आवाज़ सुन सकते हैं, हाल्लेलुयाह! उद्धार, महिमा, सामर्थ हमारे परमेश्वर की ओर से हैं।

आत्मा अपनी मर्ज़ी से बात नहीं करेगा; वो जो सुनेगा वही कहेगा और आनेवाली बातें हमें बताएगा।

यदि हम आत्मा की अगुवाई में चल रहे हैं तो, आत्मा यीशु के पास से उनकी बातों को लेकर उन्हें हम पर खुला करेगा। क्या हम परमेश्वर के ज्ञान में बढ़ रहे हैं?

उपयोग:
यीशु के बारे में वह कौनसी बातें हैं जिन्हें समझने में पवित्र आत्मा ने आपका मदद किया और जिसके कारण प्रति आपकी सराहना और अधिक बढ़ गई और पहले से ज्यादा बढ़कर यीशु की महिमा (प्रशंसा, आदर) करने में आपको मदद मिली?

प्रेरित 4:31-32 जब वह प्रार्थना कर चुके तब वह स्थान, जहां वे इकट्ठे हुए थे, हिल गया; और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन साहस से सुनाते रहे। विश्वास करने वालों की मण्डली एक चित्तऔर एक मन की थी। यहां तक कि कोई भी विश्वासी अपनी सम्पत्ति को अपनी नहीं कहता था। परन्तु उन में सब कुछ साझे का था।

यदि हम पीछे जाकर प्रेरितों के समय को देखें, तो हम यह पता चलता है कि जब भी उन्होंने यीशु के बारे में बात की तब उन्हें सताव सहना पड़ा। लेकिन कहीं भी हम यह नहीं पढ़ते कि उन्होंने यीशु के बारे में बताना बन्द कर दिया या उन सताओं से डर गए। यह इसलिये हुआ क्योंकि वो पवित्र आत्मा से पूरी तरह भरे हुए थे, और पवित्रा आत्मा ने उन्हें परमेश्वर के वचनों का प्रचार साहस के साथ करने में सक्षम किया।

हमें प्रचार करने का या सिखाने का मौका मिले तो क्या हम उसे साहस के साथ करेंगे या चाहेंगे कि कोई और करे तो अच्छा होगा। शायद हमारी सोच यह है कि यह काम केवल अगुवों को ही यह करना चाहिये।

सभी विश्वासी एक चित्त और एक मन के थे। वे जहां भी गए वहां साहस के साथ प्रचार किया।

उपयोग:
आपके किसी एक मीटींग में साहस के साथ प्रचार करो। यदि आप ही हमेशा प्रचार करते हो तो, किसी दूसरे शिष्य को जो यह कर सकता है उसे प्रचार करने का मौका दो।

प्रेरित 5:1-3 हनन्याह नामक एक मनुष्य था। उस ने और उसकी पत्नी सफीरा ने कुछ भूमि बेची। उन्होंने उसके दाम में से कुछ रूपया अपने पास छिपाकर रख लिया। यह बात उसकी पत्नी भी जानती थी। हनन्याह ने उसका एक भाग लाकर प्ररितों के पांवों के आगे रख दिया। तब पतरस ने कहा, ङ्कहे हनन्याह! शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली है कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले, और भूमि के दाम में से कुछ छिपाकर रख ले?

कभी कभार किसी और बात की चाह हमें इस हद्द तक अन्धा कर देती है कि हम यह सोचने लगते हैं कि परमेश्वर से भी हम अपने आपको छिपा सकते हैं। पवित्र आत्मा से भरे हुए हनन्याह ने क्षण भर में ही शैतान को अपने मन में घर करने दिया।

हम किस चीज़ से भरे हैं? परमेश्वर के प्रेम से या फिर संसार की दूसरी बातों से? जो कोई भी संसार से मित्रता करने का चुनाव करता है वह परमेश्वर का बैरी बन जाता है। (याकूब 4:4)

यदि हम आत्मा की अगुवाई में चल रहे हैं, तो हम हमेशा सच ही बोलेंगे। यदि हमने किसी से झूठ बोला याने हमने परमेश्वर से झूठ बोला।

उपयोग:
यदि आपने पहले किसी से झूठ बोला है तो आओ हम जाकर उससे कबूली करें और उससे क्षमा मांगें। अब से आगे आओ हम सिर्फ सच ही बोलें।

प्रेरित 5:7-9 लगभग तीन घंटे के बाद उसकी पत्नी पतरस के पास घर के भीतर आई। जो घटना घटी थी, उस से वह अनजान थी। तब पतरस ने उससे कहा, ‘मुझे बता, क्या तुम ने वह भूमि इतने ही में बेची थी?’ उस स्त्री ने कहा, ‘हां इतने ही में।’ पतरस ने उससे कहा, ‘यह क्या बात है कि तुम दोनों ने प्रभु की आत्मा की परीक्षा के लिए एका किया? देख तेरे पति के गाड़नेवाले द्वार ही पर खड़े हैं, और वे तुझे भी बाहर ले जाएंगे।’

हनन्याह की पत्नी सफीरा ऐसा करने से हनन्याह को रोक सकती थी, पर ऐसा लगता है जैसे वो भी लालच में अन्धी हो गई थी। उसने भी झूठ बोला। जब हम किसी के साथ भावनाओं से जुड़े होते हैं तो बड़ी जल्दी उसका असर हमपर होने लगता है।

यदि परमेश्वर किसी बात को हम पर प्रकट करता है तो, अच्छा यह है कि हम उसके बारे में बात करें। भावनाओं के जाल में फंसने के बजाए हमारा ध्यान उन बातों पर होना चाहिये जो बातें परमेश्वर को प्रसन्न करती हैं। नहीं तो उन भावनाओं के कारण हम झूठ बोलने और पवित्र आत्मा की परीक्षा करने लगेंगे।

उपयोग:
क्या आपके परिवार के या कलीसिया के लोगों के बारे में कोई बात परमेश्वर ने आप पर प्रकट किया है? कृपया पवित्र आत्मा की मदद से उसके बारे में प्रार्थना करो, और उनसे बात करके उन्हें परमेश्वर को प्रसन्न करने में मदद करो।

प्रेरित 7:51-53 ङ्गहे हठीले मन और कान के खतनारहित लोगों, तुम सदा पवित्र आत्मा का सामना करते रहे हो। जैसा तुम्हारे पूर्वज करते थे वैसे ही तुम भी करते हो। नबियों में से किस को तुम्हारे पूर्वजों ने नहीं सताया? उन्होंने उस धर्मी के आगमन का पूर्वकाल से सन्देश देनेवालों को भी मार डाला। अब तुम भी उसके पकड़वानेवाले और मार डालनेवाले सिद्ध हुए। तुम ने स्वर्गदूतों के द्वारा ठहराई हुई व्यवस्था तो पाई, परन्तु उसका पालन नहीं किया।ङ्ख

परमेश्वर ने हमें उनकी आज्ञाएं दीं कि हम उनका पालन करें। जब हम उनका पालन नहीं करते तो वह लोगों को भेजता है कि वह हमें उसके दिशा में चलने में मार्गदर्शन करें। उन्होंने नबियों को भेजा। लेकिन अक्सर हमने देखा है कि वो लोग जो परमेश्वर की दिशा के बारे में बताते हैं उनकी ठट्ठा की जाती है, अनादर किया जाता है यहां तक कि जान से मार दिया जाता है।

जो तुम्हारे अगुवे थे, और जिन्होंने तुम्हे परमेश्वर का वचन सुनाया है, उन्हें स्मरण रखो; और ध्यान से उनके चालचलन का अन्त देखकर उनके विश्वास का अनुसरण करो। (इब्रानियों 13:7)। अपने अगुवों की बात मानों; और उनके अधिन रहो, क्योंकि वे उनके समान तुम्हारे प्राणों के लिये जागते रहते हैं जिन्हें लेखा देना पड़ेगा। वो ये काम आनन्द से करें ना कि ठंडी सांस ले-लेकर; क्योंकि इस दशा में तुम्हे कुछ लाभ नहीं। (इब्रानियों 13:17)।

यदि हम परमेश्वर के वचनों को भीतर आने की अनुमती नहीं देते हैं तो हम पवित्र आत्मा का विरोध करते हैं।

उपयोग:
समय निकालकर किसी अगुवे से मिलो और उससे पूछो कि तुम मसीह में और अधिक कैसे बढ़ सकते हो? बिना किसी विरोध के उसकी बातें सुनों।

पैसे देकर पवित्र आत्मा को खरीदा नहीं जा सकता है दिन 9

प्रेरित 8:18-21 जब शिमोन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता है तब वह उनके पास रूपए लाया। उस ने कहा, ङ्कयह अधिकार मुझे भी दो कि जिस किसी पर मैं हाथ रखूं , वह पवित्र आत्मा पाए।ङ्क पतरस ने उस से कहा, ङ्कतेरे रूपये तेरे साथ नाश हों, क्योंकि तू ने परमेश्वर का दान रूपयों से मोल लेने का विचार किया है। इस बात में न तेरा हिस्सा है, न बांटा; क्योंकि तेरा मन परमेश्वर के आगे सीधा नहीं है।ङ्क

कभी-कभी हमें यह सोचने के प्रलोभन में गिर जाते हैं कि; पैसा होगा तो हम कुछ भी कर सकते हैं। शिमोन ने भी यही सोचा कि पैसों से वह पवित्र आत्मा जो परमेश्वर का दान है उसे खरीद सकता है।

अपना वरदान किसे दे यह परमेश्वर तय करते हैं। जब तक परमेश्वर हमें न दें तब तक हम उसे नहीं पा सकते। जब तक परमेश्वर तय न करें किसे देना है, हम किसी को नहीं दे सकते। पवित्र आत्मा परमेश्वर उन्हें देते हैं जो उनकी आज्ञाओं का पालन करते हैं।

जब हम यह सोचते हैं कि पैसों से हम यह पा सकते हैं, तो परमेश्वर के कार्य में हमारा कोई भाग नहीं, क्योंकि परमेश्वर के प्रति हमारा मन सही नहीं है।

उपयोग:
किन क्षेत्रों में हमारा मन परमेश्वर के प्रति सही नहीं है, उन बातों को खुला करने के लिये पवित्र आत्मा से बिनती करो। प्रार्थना करो कि उन बातों से परमेश्वर हमें छुटकारा दें।

प्रेरित 9:31 तब सम्पूर्ण यहूदा प्रदेश, गलील प्रदेश, और सामरी प्रदेश में कलीसिया को चैन मिला और उसकी उन्नति होती गई। वह प्रभु के भय और पवित्र आत्मा की शान्ति में चलती और बढ़ती गई।

यहां पर हम पवित्र आत्मा को कलीसियाओं को प्रोत्साहन देते देखते हैं। कलीसिया की उन्नति होती गई, और प्रभु के भय में बढ़ती गई।

पिछले दिनों में पवित्र आत्मा ने कैसे आपको सम्भाला और प्रोत्साहन दिया; इसे आप कैसे याद करते हैं।

अपनी कलीसिया और पारिवारिक गुट के बारे में क्या? क्या वह बढ़ रही है? क्या हम परमेश्वर के भय में जी रहे हैं? क्या हमारे पारिवारिक गुट के शिष्य परमेश्वर के भय में जी रहे हैं? क्या हम शान्ति का आनन्द उठा रहे हैं?

उपयोग:
अपने आपको पवित्र आत्मा के प्रोत्साहन का साधन बनाओ। अपने पारिवारिक गुट में प्रोत्साहन का समय रखने की पहल करो और एक दूसरे को प्रभु के भय में जीने का प्रोत्साहन दो।

रोमियों 8:5-6 शारीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आध्यात्मिक व्यक्ति आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं। शरीर पर मन लगाना मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।

हम अक्सर हमारे शरीर का ध्यान रखते और हमारे मन को भूल जाते हैं। मन मानव शरीर के अंगों का नियंत्रण करता है। वह बुध्दि और ज्ञान से मार्गदर्शन करता है। वह प्रतिदिन हमारे स्मरण शक्ति के माध्यम से हमारी मदद करता है।

यदि हम हमारे मन को आत्मा के नियंत्रण में सौंपते हैं तो आत्मा हमारे मन का नियंत्रण करता है। आत्मा द्वारा नियंत्रित मन का अर्थ है जीवन और शान्ति। नहीं तो हमारा मन उन बातों पर लगा रहता है जिसकी इच्छा हमारी पापमय प्रवृती करती है। एक पापमय व्यक्ति का मन मृत्यु है।

उपयोग:
अपनी अभिलाषाओं की सूचि बनाकर यह देखो कि हमारा मन पापमय प्रवृती के नियंत्रण में है या आत्मा के।

पवित्र आत्मा हमारे लिये मध्यस्ती करता है

दिन 12

रोमियों 8:26-27 इसी प्रकार आत्मा भी हमारी दुर्बलताओं में हमारी सहायता करता है; क्योंकि हम नहीं जानते कि हमें प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए। परन्तु आत्मा स्वयं ऐसी आहें भर-भरकर, जो ब्यान से बाहर है, हमारे लिए बिनती करता है। हमारे मन का जांचनेवाला परमेश्वर जानता है, कि आत्मा की मनसा क्या है। क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिये परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बिनती करता है।

हमारे जीवन में क्या हमने कभी इस बात का अनुभव किया है कि हम किसी ऑफिस में किसी प्रकार का सर्टिफिकेट लेने गए? हम वहां किसी को नहीं जानते और इसीलिये वहां के काम करने का ढंग हमे नही पता और हम बहुत परेशान हैं। अचानक एक व्यक्ति आया और उसने हमारी मदद की और हम पूरी शान्ति के साथ उस ऑफिस से निकले।

पवित्र आत्मा हमे हमारी कमज़ोरियों में मदद करता है। कभी-कभी क्या करना है यह हमें पता नहीं होता है। एक क्षेत्र में हम सभी संघर्ष करते हैं और वह है हमारा प्रार्थना जीवन। कभी-कभी हम समझ नहीं पाते हैं कि किस बात के लिये और कैसे प्रार्थना करें! पवित्र आत्मा हमें हमारे प्रार्थना जीवन में मदद करता है। पवित्र आत्मा हमारे लिये आहें भर-भरकर मध्यस्ती करता है जिसे शब्दों में ब्यान नहीं किया जा सकता। पवित्र आत्मा परमेश्वर के इच्छानुसार हमारी मध्यस्ती करता है।

उपयोग:
पवित्र आत्मा से मांग करो कि वह आपके प्रार्थना जीवन को बेहतर बनाए। वह जैसे मार्गदर्शन करता है उसके अनुसार प्रार्थना करो और इस प्रक्रिया को करते हुए उन्नति के आनन्द का अनुभव लो।

रोमियों 14:17-19 क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना-पीना नहीं; परन्तु धर्म, मेल-मिलाप और वह आनन्द है, जो पवित्र आत्मा से होता है। जो कोई इस रीति से मसीह की सेवा करता है, वह परमेश्वर को पसन्द आता है, और मनुष्यों में ग्रहण योग्य ठहरता है। इसीलिये हम उन बातों का प्रयत्न करें जिन से मेल-मिलाप और एक दूसरे का सुधार हो।

हम परमेश्वर के राज्य में हैं। हम सभी यीशु की सेवा करना चाहते हैं। ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि हम कैसे यीशु की सेवा करते हैं? पवित्र शास्त्र कहता है जो कोई इस रीति से मसीह की सेवा करता है वह परमेश्वर को पसन्त आता है, और मनुष्यों में ग्रहण योग्य ठहरता है।

पवित्र आत्मा में क्या हमारा ध्यान धर्म, मेल-मिलाप और आनन्द पर केन्द्रित है? क्या हमारा ध्यान उन बातों पर है जिनसे एक दूसरे का सुधार हो? जब हम धर्मी नहीं होते तो हम शान्ति और आनन्द खो देते हैं।

आओ हम हर वो प्रयत्न करें जो आनन्द और एक दूसरे के सुधार के लिये हो।

उपयोग:

क्या आपके जीवन में कोई ऐसी परिस्थिती है जो आपकी शान्ति आपसे छीन रही है? इसे सही करने के लिये पवित्र आत्मा की मदद और सल्ाह मांगो, ताकि आप उस शान्ति और आनन्द को पा सको जो पवित्र आत्मा आपको देता है। इस आज्ञा को पूरा करने के रास्ते ढूंढो "पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो।" (मत्ती 6:33)

1कुरून्थियों 2:9-11 परन्तु जैसा धर्मशास्त्र में लिखा है; "जो आंख ने नहीं देखा, और कान ने नहीं सुना, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ीं, वे ही हैं, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम करनेवालों के लिये तैयार की हैं।" परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रकट किया। आत्मा सब बातें वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है। कौन मनुष्य किसी दूसरे मनुष्य की बातें जानता है? केवल मनुष्य की आत्मा जो उस में है। वैसी ही परमेश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता, केवल परमेश्वर का आत्मा।

परमेश्वर हमसे प्रेम करते हैं। परमेश्वर ने हमारे लिये कुछ खास तैयार किया है। उसे परमेश्वर ने अपनी आत्मा के द्वारा हम पर प्रकट किया है। हम पर परमेश्वर ने जो प्रकट किया है वह है यीशु मसीह। आत्मा परमेश्वर की गूढ़ बातों को भी जांचता है।

क्या दूसरों के या अपने करीबी लोगों के विचारों को जानने की क्षमता हम में है? परन्तु हमारे अन्दर का आत्मा हमें परमेश्वर के विचारों को जानने में मदद करता है।

परमेश्वर ने जो आश्चर्यजनक वरदान हमें दिया है उसके बारे में सोचकर हमें कितना खास महसूस करना चाहिये।

उपयोग:
परमेश्वर ने यह जो पवित्र आत्मा का आश्चर्यजनक वरदान हमें दिया है, समय निकालो और उसके लिये परमेश्वर का धन्यवाद करो।

1कुरून्थियों 3:16-17 क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में निवास करता है? यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नष्ट करेगा तो परमेश्वर उसे नष्ट करेगा; क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो।

कल्पना करो कि आप किसी मन्दिर/चर्च में जाते हो और वहां हर तरह के पाप होते देखते हो। क्या हमें गुस्सा नहीं आएगा? कभी-कभी हमारी कलीसिया में हो रहे कुछ बातों को देखकर हम क्रोधित हो जाते हैं।

ठीक इसी तरह हमारा शरीर भी सभी पापों से मुक्त होना चाहिये। **व्यभिचार से दूर भागो। अन्य जितने पाप मनुष्य करता है, वे शरीर के बाहर हैं; परन्तु व्यभिचार करनेवाला अपने ही शरीर के विरूद्ध पाप करता है** (**1कुरून्थियों 6:18)।** आओ हम परमेश्वर के मन्दिर को नष्ट न करें। आओ हम उस पवित्र रखें।

तुम अपने नहीं हो; क्योंकि तुम दाम देकर मोल लिए गए हो। इसलिए अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो(1कुरून्थियों 6:20)।

समय निकालो और खास करके अपने शरीर के अंगों के द्वारा किये हुए पापों को कबूल करो और क्षमा पाने के लिये प्रार्थना करो। और साथ ही यह भी निश्चय करो कि अपने शरीर के वही अंग आप पवित्र आत्मा के मदद के द्वारा परमेश्वर की महिमा के लिये अर्पण करोगे।

1कुरून्थियों 12:4-7 वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है। सेवा भी कई प्रकार की है, परन्तु प्रभु एक ही है। प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है, जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है। परन्तु सब के लाभ के लिये हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है।

कई बातों में हम एक दूसरे से बहुत अलग हैं लेकिन हमारे अन्दर का आत्मा एक ही है। इसलिये हरएक शिष्य के प्रति एक ही समान ध्यान रखना चाहिये। कभी-कभी हम लोगों की प्रतिभाओं और उनकी सेवाओं के कारण उनपर विशेष ध्यान देने के प्रलोभन में पड़ जाते हैं। परमेश्वर एक ही है, जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है।

और सब के लाभ के लिये हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है। चाहे जो भी वरदान हमें मिला हो, क्या हम उसका उपयोग सब के लाभ के लिये कर रहे हैं?

उपयोग:
पवित्र आत्मा ने जो वरदान आपको दिये हैं उनके लिये परमेश्वर का धन्यवाद करो। और पवित्र आत्मा द्वारा दिये गए अपने उन वरदानों का उपयोग कुछ इस तरह से करो कि उनके द्वारा आपके पूरे पारिवारिक गुट या पूरी कलीसिया को लाभ मिल सके।

आत्मा के कामों को परमेश्वर निर्धारित करते हैं दिन 17

1कुरून्थियों 12:8-11 एक को आत्मा के द्वारा बुध्दि की बातें दी जाती हैं तो दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें। किसी को उसी आत्मा से विश्वास तो किसी को उसी एक आत्मा से रोगियों को स्वस्थ करने का वरदान दिया जाता है। फिर किसी को सामर्थ के काम करने की शक्ति, और किसी को भविष्यवाणी की। किसी को आत्माओं की परख करने की तो किसी को भाषाओं का अर्थ बताने की सामर्थ। परन्तु ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा करता है, और जिसे जो देना चाहता है, वह उसको बांट देता है।

हमेशा कलीसिया में अलग-अलग शिष्यों में हमें अलग-अलग वरदान दिखाई पड़ते हैं। ये सभी काम एक ही आत्मा के हैं। परन्तु हमें कौनसा वरदान चाहिये इसका चुनाव हमारे हाथ में नहीं है। अलग-अलग तरह के वरदान पाने की हमारी इच्छाएं हो सकती हैं, परन्तु इसका निर्णय परमेश्वर करते हैं।

आत्मा के वरदानों को परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बांटा जाता है। क्या आपने अपने वरदानों पहचाना है? क्या उनका उपयोग हम दूसरों के लाभ के लिये कर रहे हैं?

हालांकि हमारे वरदान भिन्न-भिन्न हैं फिर भी हमें एक-दूसरे की आवश्वक्ता है, परमेश्वर ने हम सभी को एकत्रित किया ताकि हम उसके राज्य का निर्माण करें।

उपयोग:
प्रार्थना करो कि पवित्र आत्मा के दिये वरदानों के द्वारा हम पूरे सामर्थ से परमेश्वर के राज्य का निर्माण करें।

2कुरून्थियों 3:5-6 यह नहीं कि हम अपने आप में इस योग्य हैं कि अपनी ओर से किसी बात का विचार कर सकें। पर हमारी योग्यता परमेश्वर की ओर से है। जिस ने हमें नई वाचा के सेवक होने के योग्य भी किया और शब्द के सेवक नहीं वरन् आत्मा के; क्योंकि शब्द मारता है, पर आत्मा जिलाता है।

हमें सक्षम होना है। परमेश्वर ने हमें नई वाचा के सेवक होने के योग्य बनाया है। वचन अपने बाहरी रूप में पत्थर की तखतियों पर लिखे हुए नियम हैं। नियमों का वचन पुरानी वाचा से आया।

नई वाचा में, हमारे भीतर निवास करता आत्मा हमारे लिये नियम है जो हमारे हृदयों पर लिखा गया है। वह हमारे अन्दर है कि हमें मार्गदर्शन करे और हमारे लिये नियम बने। परन्तु नियम और वचन एक-दूसरे के दुश्मन नहीं हैं। वो दोनों एक साथ मिलकर काम करते हैं लेकिन आत्मा से जो होता है वह बेहतर होता है। आत्मा जीवन देता है।

उपयोग:
क्या आप सेवक के रूप में सक्षम हैं? परमेश्वर की सेवकाई करने के लिये जिन बातों में आपको कुशल सेवक बनना है उनके बारे में सोचो और पवित्र आत्मा से प्रार्थना करो कि आपको एक सक्षम सेवक बनाए।

2कुरून्थियों 3:7-9 यदि मृत्यु की वह वाचा जिसके अक्षर पत्थरों कर खोदे गए थे, यहां तक तेजोमय हुई कि मूसा के मुंह पर के तेज के कारण, जो घटता भी जाता था, इस्त्राएली मूसा के मुंह पर दृष्टि नहीं कर सकते थे। इसलिए आत्मा की वाचा और भी तेजोमय क्यों न होगी? जब दोषी ठहरानेवाली वाचा तेजोमय थी, तो धर्मी ठहरानेवाली वाचा और भी तेजोमय क्यों न होगी?

पुरानी वाचा दोषी ठहरानेवाली वाचा थी, लेकिन नई वाचा धर्मी ठहरानेवाली वाचा है। दूसरों के दिलों से जब हम निपटते हैं तो क्या हमारा ध्यान उनकी धार्मिक बातों पर रहता है या उन्हें दोषी ठहराने पर?

पुरानी वाचा का तेज जो मूसा के चेहरे पर चमक रहा था, वह घटता भी जाता था, लेकिन नई वाचा का तेज सदा बना रहता है कभी घटता नहीं।

जो महिमापूर्ण कार्य परमेश्वर ने हमें करने के लिये दिया है क्या उसके कारण हम अपने आपको सौभाग्यशाली समझते हैं?

उपयोग:
जो महिमापूर्ण कार्य परमेश्वर ने तुम्हें करने के लिये दिया है उसके लिये एक साथी को चुनो और उसके साथ मिलकर परमेश्वर का धन्यवाद करो।

आत्मा हमें एक बयाने (डिपॉज़िट) के रूप में दिया गया है दिन 20

2कुरून्थियों 5:5-7 जिसने इसी बात के लिए तैयार किया है, वह परमेश्वर है। उस ने हमें बयाने में आत्मा की दिया है। इसलिए हम सदा ढाढ़स बांधे रहते हैं। हम यह जानते हैं कि जब तक हम देह में रहते हैं तब तक प्रभु से अलग हैं। हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं।

जब आप किसी को किसी कारण से जैसे कि घर लेने से पहले अग्रिम भुगतान (डाऊन पेमेंन्ट) करते हैं तो इसका अर्थ यह होता है कि अभी कुछ ही पैसे देकर आपने इस बात की गारंटी दी है कि एक दिन पूरे पैसे अदा करेंगे।

परमेश्वर ने हमें पवित्र आत्मा एक बयाने के रूप में दिया है जो होनेवाली बातों की गारंटी है। अभी हम जब इस संसार में हैं तो कराह रहे हैं, स्वर्गीय निवास के वस्त्र पहनने के इंतज़ार में।

हमें रूप देखकर नहीं पर विश्वास में चलना है। हमारे पिता के घर में हमारे लिये एक जगह तैयार है।

उपयोग:
पवित्र आत्मा के द्वारा पाए विश्वास से आज कुछ असाधारण कार्य करो।

गलातियों 3:1-3 हे निर्बुध्दि गलातियों! किस ने तुम्हें मोल लिया है? तुम्हारी तो आंखों के सामने यीशु मसीह क्रूस पर दिखाया गया था। मैं तुम से केवल यह जानना चाहता हूँ कि तुम ने आत्मा को क्या व्यवस्था के कामों से या विश्वास के समाचार से पाया है? क्या तुम ऐसे निर्बुध्दि हो कि आत्मा की रीति पर आरम्भ करके अब शरीर की रीति पर अन्त करोगे?

नियम या व्यवस्था का पालन करके हम पवित्र आत्मा का वरदान हासिल नहीं कर सकते। हम सभी को हमारे साधारण विश्वास के कारण पवित्र आत्मा दिया गया है।

गलाति के लोग बजाए इसके कि एक साधारण विश्वास रखकर यीशु की आज्ञाओं का पालन करते वो इस बात के धोखे में थे कि आत्मिक उन्नति या परिपक्वता को शरीर के कामों से हासिल किया जा सकता है।

आत्मा की रीति से आरम्भ करके क्या आज हम अपने लक्ष्यों को मनुष्य के कार्यो से प्राप्त करना चाह रहे हैं?

उपयोग:
अपने जीवन के उन क्षेत्रों को पहचानो जहां पर आपका विश्वास अपने कामों पर था, और उसे सुधारो। नए साल के अपने लक्ष्य और संकल्पों पर नज़र डालो और यह जानने का प्रयत्न करो कि जिस तरह से शुरूआत में आपने इन सब बातों को करने की योजना बनाई थी क्या आज उनमें आप उसी तरह उन्नति कर रहे हो? आपने जो योजना बनाई थी उससे भी अधिक, परमेश्वर के सामर्थ और विश्वास से हासिल करने के लिये पवित्र आत्मा की सहायता मांगने में लगातार लगे रहो।

गलातियों 4:6-9 तुम पुत्र हो। अब परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो "हे अब्बा", "हे पिता" कहकर पुकारता है, हमारे हृदय में भेजा है। इसलिए तू अब गुलाम नहीं, परन्तु पुत्र है; और जब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ।
पहले जब तुम परमेश्वर को नहीं जानते थे तब उनके गुलाम थे जो स्वभाव से परमेश्वर नहीं। पर अब तुम ने परमेश्वर को पहिचान लिया, वरन् परमेश्वर ने तुमको पहिचाना है तो तुम उन निर्बल और निकम्मी आदि-शिक्षा की बातों की ओर क्यों फिरते हो जिनके तुम दोबारा गुलाम होना चाहते हो?

कल्पना करो कि तुम किसी महान राजा या राष्ट्रपती के पुत्र हो। तुम्हारा जीवन पूरी तरह अलग होगा। इस तरह के एक महान राजा के पुत्र होने के नाते आपके सपने क्या होंगे?

हम परमेश्वर के बच्चे हैं। हम अभी गुलाम नहीं परन्तु परमेश्वर की सन्तान हैं। परमेश्वर ने हमें एक वारिस भी बनाया है। क्या उनके राज्य के लिये सपने देखते हैं? हमारा कितना बड़ा सौभाग्य है कि परमेश्वर ने हमें उसके बेटे और बेटियां कहकर बुलाया है।

क्या आप किसी बात के, किसी व्यक्ति के, किसी दयनीय सिद्धान्त/ संकल्प की गुलामी में हो?

उपयोग:
जिन कमज़ोर और दयनीय सिद्धान्तों का आपको प्रलोभन है, उनकी सूची बनाओ। फिर से परमेश्वर की ओर मुड़ो और उस सूची के द्वारा परमेश्वर से प्रार्थना करो कि उनसे परमेश्वर आपको छूटकारा दे। किसी के साथ इस बात की चर्चा करो जो आपको वचनों से मदद कर सके इन बातों को जड़ से उखाड़ फेंकने में।

गलातियों 5:16-17 इसलिए मैं यह कहता हूं: आत्मा मे अनुसार जीवन बिताओ तो तुम शरीर की वासनाओं की पूर्ति करने से बचे रहोगे। क्योंकि शरीर आत्मा के विराध में, और आत्मा शरीर के विरोध में इच्छा करता है। ये एक दूसरे के विरोधी हैं। इसलिए जो तुम करना चाहते हो, वह नहीं कर सकोगे।

यदि हम आत्मा की अगुवाई में चलेंगे तो पापमय अभिलाषाओं को खुश (पूरा) नहीं करेंगे। आत्मा हर समय हमारे साथ है।

कल्पना करो कि आपके पिताजी हमेशा आपके साथ हैं और आप किसी पाप में गिरते हैं। वो आपको कभी ऐसा नहीं करने देंगे। दूसरे शब्दों में: यदि आप पाप में गिरना चाहते हैं तो आपको अपने पिता को दूर धकेलना होगा और तब ही आप वो पाप कर पाओगे।

आओ हम भरसक प्रयत्न करें कि हमारी पापमय अभिलाषाओं को पूरा करने के लिये हम पवित्र आत्मा को हमसे दूर न धकेलें।

उपयोग:
अपने पापमय अभिलाषाओं को पहचानो और उनसे छुटकारा पाने के लिये प्रार्थना करो। जब भी आप प्रलोभन में पड़ो तो और अधिक ध्यान देकर पवित्र आत्मा की बात और निर्देशों को सुनो और उसके अधिन होने का आनन्द उठाओ।

गलातियों 5:22-25 किन्तु आत्मा का फल है: प्रेम,आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम। ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं। जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी वासनाओं और इच्छाओं सहित क्रूस पर चढ़ा दिया है। यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं तो आत्मा के अनुसार चलें भी।

क्या हममें आत्मा का फल है? कौन इस फल को उपजाता है? क्या आप इस बात को जानते हो कि इसे हम नहीं केवल पवित्र आत्मा ही उपजा सकता है। हमें सिर्फ इतना करना है कि हमारे मनों में, हमारे हृदयों में और हमारे जीवनों में हमें पवित्र आत्मा के लिये जगह खाली रखना है ताकि पवित्र आत्मा हममें जड़ पकड़ सके। इसका अर्थ है हमें आत्मा के रास्ते में अड़चन नहीं बनना है। हमारे पापमय प्रवृती को हमें मार डालना है।(ये बाग में से चुन-चुनकर कांटे और कंटीले पौधे, जंगली घांस को निकाल फेंकने और बाग को साफ करने के समान है ताकि पेड़ फल-फूल सके और अच्छे फल दे)। अपने लिये जीना बन्द करके मसीह के लिये जीना शुरू करो। फिर आत्मा फल लाएगा।

जितने भी गुण यहां लिखे हैं वह सभी एक धार्मिक व्यक्ति में मिलेंगे। यह गुण हममें तभी आएंगे जब हम अपने पापमय प्रवृती को उसकी अभिलाषाओं और वासना सहित क्रूस पर चढ़ा देंगे।

आओ हम अपनी पापमय प्रवृती को उसकी अभिलाषाओं और वासना सहित क्रूस पर चढ़ाने का हर संभव प्रयत्न करें।

उपयोग:
आपके भीतर अभी भी जो पापमय प्रवृती के फल हैं उनकी सूची बनाओ और प्रार्थना द्वारा इस प्रवृती को मार डालने के स्पष्ट योजना बनाओ। अपने भीतर आत्मा के फल उपजाने के द्वारा अपने अन्दर हो रहे आत्मा की उन्नति का आनन्द उठाओ।

इफिसियों 1:13-14 उसी में तुम पर भी जब तुम ने सत्य का वचन सुना जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है, और जिस पर तुम ने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी। वह उसके मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिये हमारी मीरास का बयाना है जिस से उसकी महिमा की स्तुति हो।

हम जानते हैं कि कोई भी सर्टिफिकेट बिना आधिकारिक मुहर के सही नहीं माना जाता और न ही उसे कोई स्विकारता है।

जब हमने सुसमाचार सुना तब हम मसीह से जुड़ गए। जब हमने विश्वास किया, मन फिराया और बपतिस्मा लिया, तब हम पर पवित्र आत्मा का मुहर (छाप) लगा।

परमेश्वर से यह सर्टिफिकेट पाना कि तुम मेरे हो; कितना खास है? हमारे लिये यह जानना कितने सौभाग्य की बात है कि हमारा नाम जीवन की पुस्तक में लिखा गया है?

उपयोग:
उन शिष्यों को याद करो जिन्होंने तुम्हें आमंत्रण दिया और तुम्हारे साथ पवित्र शास्त्र अध्ययन किया। उनके लिये प्रार्थना करो और एक प्रोत्साहन भरा पत्र उन्हें लिखो। तुम्हारे अन्दर के पवित्र आत्मा के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करो, जो आपको स्विकारे जाने की छाप है।

इफिसियों 4:1-3 मैं, जो प्रभु में बन्दी हूं, तुम से निवेदन करता हूं कि जो आवाहन तुम्हें दिया गया था, और जिस में तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य आचरण करो। तुम पूरी दीनता और नम्रता के साथ, धीरज रखते हुए प्रेम से एक दूसरे की कठिनाईयों को सह लो। शान्ति के बन्धन आत्मा की एकता रखने का प्रयत्न करो।

हर एक गुट, टीम और कलीसिया के लिये एकता एक बहुत बड़ी बात है। एकता को बिगाड़ना शैतान का एक मूल हत्यार है जिसका उपयोग वह अपनी योजनाओं को पूरा करने के लिये करता है।

क्या एक परिवार .... एक मिनिस्ट्री होने के नाते हम एकता में हैं? यदि नहीं तो अभी समय है कि हम इस बदलें। इसे तुरन्त करें; थोड़ी सी देरी बड़ा नुकसान कर सकती है।

एकता में बने रहने के लिये ज़रूरी है कि हम पूरी तरह से दीन, धिरजवंत बने रहें और प्रेम से एक दूसरे को सह लें।

उपयोग:
दीनता में कैसे बढ़ें इसके लिये पवित्र आत्मा से मदद मांगो ताकि आप अपनी कलीसिया और परीवार में एकता निर्माण कर सको। किसी क्षेत्र में यदि आप घमंडी हो जिसके कारण एकता को चोट पहूंची है तो उसे कबूल करो, पश्चाताप करो और शान्ति के बन्धन को बढ़ाओ।

इफिसियों 4:1-7 एक ही देह है और एक ही आत्मा है। जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे, अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है। एक ही विश्वास है। एक ही बपतिस्मा है। सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर, और सब के मध्य में, और सब में है। किन्तु हम में से हर एक को अनुग्रह मिला है जैसा मसीह ने उसको बांटा है।

मसीह से अनुग्रह पाना एक विशेषाधिकार है। मसीह ने उसे बांटा है। हम सभी को एक ही आशा में बुलाया गया है। परमेश्वर सबसे ऊपर, सबके मध्य में और सब में हैं। हम सभी एक देह और एक आत्मा हैं।

क्या हर बात में हम परमेश्वर को देखते हैं? क्या हम एक प्रभु, एक विश्वास, एक बपतिस्मा, एक परमेश्वर की बात से सहमत हैं? हमारे आस-पास के लोग क्या परमेश्वर की इस योजना में हमें एक मन पाते हैं?

या फिर पूरी तरह से हमारा एक अलग रास्ता है, मेरी मर्ज़ी, मेरी योजना, मेरे विचार, परमेश्वर से मेरा रिश्ता, मेरी समझ.....

उपयोग:
परमेश्वर के अनुग्रह और बुलाहट के लिये उनका धन्यवाद करो। जब आप बुलाए गए और आपने परमेश्वर के पिछे चलने के सारे निर्णय लिये उस बात को याद करो और उसके द्वारा प्रार्थना करो। हर एक के साथ एक समान प्रेम और आदर से पेश आओ।

इफिसियों 4:29-31 कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यक्ता के अनुसार वही निकले जो आत्मिक उन्नति के लिए उत्तम हो ताकि उस से सुननेवालों पर अनुग्रह हो। परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिसके द्वारा तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है। सब प्रकार की कड़वाहट, प्रकोप, क्रोध, कलह, निन्दा, सब बैरभाव आदि तुम से दूर किए जाएं।

उत्पत्ति **6:5-6** में हम पढ़ते हैं, और यहोवा ने देखा कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है सो निरन्तर बुरा ही होता है। और प्रभु पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया, और वह बन में अति खेदित हुआ।

हम हमारे अन्दर बसे पवित्र आत्मा को पवित्रता का इनकार कर या संसारिक बातों पर निर्भर रहने के कारण शोकित कर सकते हैं। जब हमारे पास प्रार्थना करने का भी समय नहीं होता तो हम पवित्र आत्मा को शोकित करते हैं।

क्या हमारे शब्द और हमारा स्वभाव दूसरों को उनकी आवश्यक्ता के अनुसार उन्नति करने में मदद करते हैं?

उपयोग:
आपके करीबी लोगों से प्रार्थनापूर्वक यह पूछिये कि आपकी बातें दूसरों की उन्नति में मददगार हैं या फिर किसी को चोट पहूंचाने जैसे हैं? अपनी गलतियों को परमेश्वर के सामने कबूल करो और पवित्र आत्मा से प्रार्थना करो कि वह तुम्हें बुद्धि दे कि जो बोलें पूरी सतर्कता के साथ बोलें और वही बोलें जो दूसरों की उन्नति के लिये हो, क्योंकि जब हम किसी को चोट पहूंचाते हैं तो हम पवित्र आत्मा को शोकित करते हैं। पवित्र आत्मा को शोकित करने के बजाए हमारे शब्द और हमारा जीवन ऐसा हो जो पवित्र आत्मा को अपार आनन्द दे।

इफिसियों 6:16-17 इन सब के साथ विश्वास की ढाल लेकर स्थिर यहो जिस से तुम उस 'दुष्ट' के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको। तुम उद्धार का टोप, आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो।

परमेश्वर चाहते हैं कि हम आत्मिक सैनिक बनें। वह चाहते हैं कि हम परमेश्वर के सारे हथियार पहन लें ताकि शैतान की योजनाओं का हम सामना कर सकें।

एक सैनिक का मुख्य हथियार है तलवार। कल्पना करो कि एक सैनिक युद्ध में बिना तलवार के जा रहा है। यदि हम परमेश्वर के वचनों पर मनन नहीं कर रहे हैं तो यह हमारे लिये शर्म की बात है।

अधिक से अधिक लोग परमेश्वर को छोड़ देते हैं क्योंकि वो परमेश्वर का वचन नहीं सुन रहे हैं। हमारा पवित्र शास्त्र अध्ययन कैसा है?

उपयोग:
एक लक्ष्य बनाओ कि आप हर दिन परमेश्वर के वचनों पर मनन करोगे और समय मिलते ही जो आपने सीखा वो दूसरों के साथ बांटोगे। परमेश्वर वचनों के द्वारा आपसे क्या कह रहे हैं इन बातों को लिखने की आदत डालो और उसके द्वारा प्रार्थना करो और पूरे विश्वास के साथ परमेश्वर के वचनों का पालन करो। वचनों को याद करने के लिये एक योजना बनाओ जो आपके विश्वास को बढ़ाने में और शैतान से लड़ने में आपकी मदद करेगा।(एक वचन हर रोज़ या फिर हफ्ते में एक वचन याद करो)

2तीमुथियुस 1:6-7 इसी कारण मैं तुझे सुधि दिलाता हूं कि तू परमेश्वर के उस वरदान को जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझे मिला है, चमका दे; क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ, प्रेम और संयम की आत्मा दी है।

परमेश्वर ने हमें सामर्थ, प्रेम और संयम की आत्मा दी है। हमें अपने आप से यह प्रश्न करना है कि क्या मैं साहस, सामर्थ, प्रेम और संयम से भरा हुआ हूं?

परमेश्वर चाहते हैं कि हम परमेश्वर के उस वरदान की अग्नि को बुझने न दें। जो परमेश्वर ने हमें दिया है उसे ज्वलनशील रखने के लिये हम क्या प्रयत्न कर रहे हैं?

क्या यह उत्तम होगा यदि परमेश्वर हमसे कहें, "धन्य, हे अच्छे और विश्वास योग्य सेवक! तू थोड़े में विश्वास योग्य रहा। मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा। अपने स्वामी के आनन्द में सहभागी हो।"

उपयोग:
किसी गरीब को अपना प्रेम बांटो।

यहूदा 1:18-19 वे तुम से कहा करते थे कि आनेवाले दिनों में ऐसे ठट्ठा करनेवाले लोग होंगे, जो अपनी अभक्ति की अभिलाषा के अनुसार चलेंगे। ये तो वे हैं जो फूट डालते हैं। ये शरीरिक लोग हैं जिन में आत्मा नहीं। हे प्रिय भाइयों, तुम अपने अति पवित्र विश्वास में अपनी उन्नति करते और पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते जाओ।

अपने सबसे पवित्र विश्वास में अपनी उन्नति के लिये क्या हम अपना सबसे उत्तम दे रहे हैं? क्या हम कुछ ठट्ठा करनेवालों के अपवित्र अभिलाषाओं से उत्पन्न बातों के कारण विचलित हैं?

ऐसे बहुत हैं जो अपने स्वाभाविक प्रवृत्ति और असर के पीछे चलते हैं। हमें प्रार्थना करते रहना है कि हम उनके सिद्धान्तों के जाल में न फंसें।

इफिसियों 6:18 हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना और बिनती करते रहो। तुम जागते रहो ताकि तुम सब पवित्र लोगों के लिए लगातार बिनती करो।

उपयोग:
अपने पारिवारिक गुट के हरएक शिष्य का नाम लेकर प्रार्थना करो और परमेश्वर से ज्ञान की मांग करो ताकि तुम स्पष्ट रूप से उसकी आवाज़ सुन सको और विश्वास से उनका पालन करो।